THE MINISTER OF ENERGY (SHRI VASANT SATHE) : We will do the needful Thank you very much.

SPECIAL MENTIONS

Commercial use of places meant for Literary and Cultural Activities

श्रीमती अमृता प्रीतम (नाम-निर्देशित) : सभापति महोदय, मैं राज्य सरकार की तवज्जो उस तरफ दिलाना चाहती हू जहां अदब और तहजीब के नाम पर एक ऐसा कामर्शियलाइजेशन शुरू हो गया है कि सरकार से जमीन भी ली जाती है, पैसा भी और फिर उसे तरह-तरह की आमदनी का वसीला बना लिया जाता है । यह सब अदब और तहजीब के नाम पर होने लगा है । जिस मकसद के लिए यह प्लान शुरू हुआ क्या फिर कभी सरकार ने देखा कि उस मकसद का क्या हुआ? यह देखना तो दरकिनार, आगे के लिए भी कहीं कोई नजर सानी नहीं । उसी तरह जमीनें दी जा रही हैं और इस कामर्शियलाइजेशन के बीच कौन से हाथ क्या-क्या कर रहे हैं और कैसे एक नयी इजारेदारी पैदा हो रही है, मैं उस तरफ सरकार का ध्यान दिलाना चाहती हूं।

MISUSE OF TECHNIQUES TO DETERMINE THE SEX OF THE FOETUS

श्रीमती सूर्यकांता जयवंतराव पाटील (महाराष्ट्र) : सभापति महोदय, आज मैं स्त्री से जन्म का अधिकार छीनने वाली नई तकनीक की तरफ आपके माध्यम से सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहती हूं ।

अब भारत में एक ऐसी तकनीक ने प्रवेश पा लिया है जिसके जरिए मां-बाप खुद तय कर सकते हैं कि उन्हें लडका चाहिए या लडकी। इसे एक अमेरीकन वैज्ञानिक डा. रोनाल्ड एरिक्सन ने कैलिफोर्निया में विकसित किया है। खर्चीली होने के कारण एरिक्सन तकनीक का उपयोग केवल शिक्षित और उच्च वर्ग के लोग ही कर सकेंगे और लडकियों के जन्म पर रोक लगा सकेंगे जबकि गरीब तबके के लोगों के लिये यह असभव होगा । तब गरीब तबके की लडकियां क्या उच्च वर्ग के पुरुषों के हाथों शोषण से बच पाएगी । गर्भस्थ शिशु लडका है या लडकी, यह पता लगाने के लिये एमनियोसेन्टोसिस नामक तकनीक का प्रयोग काफी अरसे से किया जा रहा है। दिल्ली, बंबई, कलकत्ता, मद्रास और अन्य बड़े शहरों में इस तरह के क्लिनिक हैं जहां एमनियो-सेन्टोसिस या उससे भी अधिक नयी तकनीक कोरियोनीक बायोप्सी के द्वारा गर्भस्थ शिशु लडका है या लड़की इसका पता लगाया जाता है । परन्तु अब इससे भी भयानक तकनीक ने भारत में प्रवेश पाया है, वह तकनीक है डा. रोनाल्ड की एरिकसन तकनीक । पिछले वर्ष डा. रोनाल्ड एरिक्सन भारत आये थे और अपनी इस नयी तकनीक के बारे में बता गये थे । इसके बाद बंबई और दिल्ली के कुछ क्लिनिकों ने उनकी तकनीक का इस्तेमाल कर के पुत्र प्राप्ति इच्छायें पूरी करना शुरू कर दिया है । धीरे-धीरे यह जहर सारे हिन्दुस्तान में फैलेगा और लडकियों को जन्मने से रोका जाएगा और यह सौदा काफी महगा साबित होगा । अब तक इस तकनीक का उपयोग दुनियां के 47 एरिकसन केन्द्रों में किया जा चुका है जिसमें बबई का खार रोड स्थित एक केन्द्र भी शामिल है । लगभग 80 प्रतिशत सफलता इन्हें प्राप्त हुई है । जापान में इस तकनीक का जमकर विरोध हुआ । जापानियों का मत है कि बच्चे का लिंग निर्धारण प्राकृतिक हो । माता-पिता की सनक से नहीं । खुद अमेरिका में नैतिक आधार पर इस तकनीक का विरोध हुआ। डा एरिकसन ने अनेक तर्क दिये हैं जबकि तथ्य कुछ और ही कहते हैं । प्रकृति के कार्य में हस्तक्षेप करने वाली यह तकनीक भारत के लिये अत्यंत घातक सिद्ध होगी । भारत मानस में पुत्र कामना गहरी जड़ें जमायी हुई हैं और स्त्रियों की सामाजिक-आर्थिक स्थिति भी अच्छी नहीं है। पिछले वर्ष केवल बबई में एमनियो-सेन्टोसिस तकनीक द्वारा मादा भ्रूण का पता चलने पर 1000 में से 999 भ्रूण की हत्या कर दी गयी है । इसलिये जाहिर है कि एरिकसन तकनीक स्त्री विरोधी माहोल को और पुख्ता करने में सहायक बनेगी । दूसरी ओर स्त्री पुरुष अनुपात पर भी इसका प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। 1981 में की गई जनगणना के अनुसार भारत में 1000 पुरुषों की तुलना में केवल 934 स्त्रियां ही हैं । इन तकनीकों से यह अनुपात और भी कम हो जायेगा । क्या ऐसी दुनिया बनना ठीक होगा? क्या यह स्त्री विरोधी जघन्य अपराध नहीं होगा? क्या यह अमीर लोगों की लोलुपता गरीब औरतों को शिकार नहीं बनाएगी? और इन गरीब औरतों का जीवन आज की तुलना में निरापद नहीं